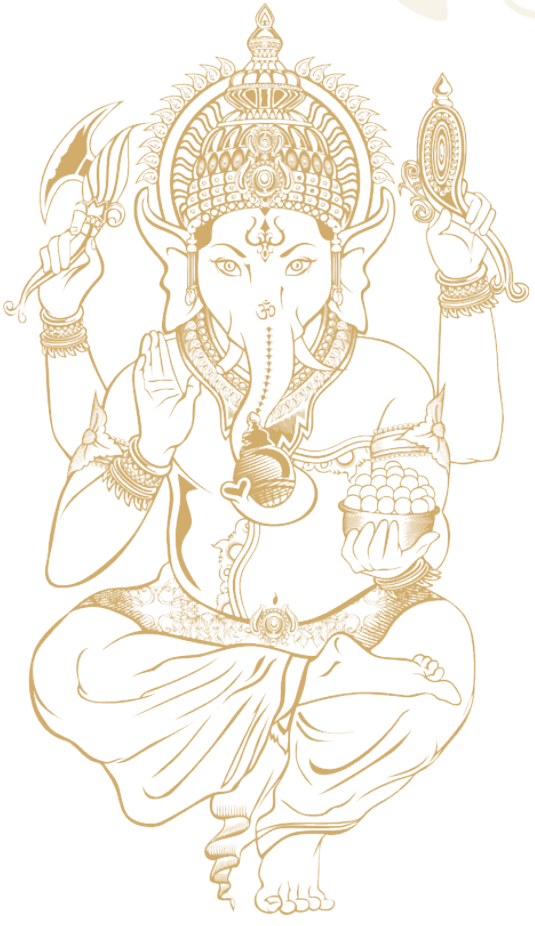

Mr. Vikrant

Indrayani shintre

Model: Web-FreeMatching

Order No: 119654611

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
05/08/1983	जन्म तिथि	18/09/1984
शुक्रवार	दिन	मंगलवार
घंटे 07:45:46	जन्म समय	13:20:00 घंटे
घटी 03:56:33	जन्म समय(घटी)	17:23:25 घटी
India	देश	India
Nasik	स्थान	Nasik
20:00:00 उत्तर	अक्षांश	20:00:00 उत्तर
73:52:00 पूर्व	रेखांश	73:52:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:34:32	स्थानिक संस्कार	-00:34:32 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:11:08	सूर्योदय	06:22:37
19:09:38	सूर्यास्त	18:34:20
23:37:24	चित्रपक्षीय अयनांश	23:38:22

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
मंगल 5वर्ष 1मा 17दि	09:09:43	सिंह	लग्न	धनु	06:05:16	मंगल 2वर्ष 11मा 2दि
शनि	18:29:33	कर्क	सूर्य	कन्या	01:55:53	शनि
22/09/2022	26:53:30	वृष	चंद्र	मिथु	01:05:52	21/08/2021
22/09/2041	00:47:06	कर्क	मंगल	वृश्चि	25:02:24	21/08/2040
शनि 25/09/2025	11:56:21	सिंह	बुध	सिंह	15:03:32	शनि 24/08/2024
बुध 04/06/2028	07:30:59	वृश्चि	गुरु	धनु	10:04:26	बुध 04/05/2027
केतु 13/07/2029	15:50:30	सिंह व	शुक्र	कन्या	27:21:47	केतु 12/06/2028
शुक्र 12/09/2032	05:03:54	तुला	शनि	तुला	19:27:05	शुक्र 13/08/2031
सूर्य 25/08/2033	00:28:20	मिथु	राहु	वृष	05:59:45	सूर्य 25/07/2032
चन्द्र 26/03/2035	00:28:20	धनु	केतु	वृश्चि	05:59:45	चन्द्र 23/02/2034
मंगल 04/05/2036	11:28:57	वृश्चि व	हर्ष	वृश्चि	16:18:23	मंगल 04/04/2035
राहु 11/03/2039	03:08:33	धनु व	नेप	धनु	05:02:05	राहु 08/02/2038
गुरु 22/09/2041	03:19:06	तुला	प्लूटो	तुला	07:00:35	गुरु 21/08/2040

लग्न-चलित

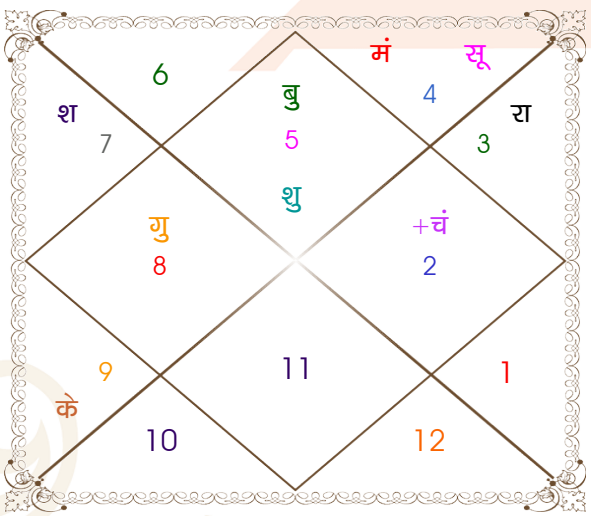

लग्न-चलित

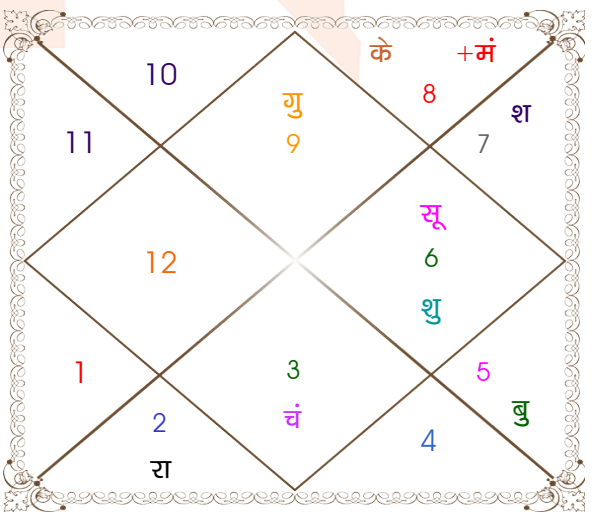

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	वैश्य	शूद्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	मानव	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	जन्म	जन्म	3	3.00	--	भाग्य
योनि	सर्प	सर्प	4	4.00	--	यौन विचार
मैत्री	शुक्र	बुध	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	देव	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	वृष	मिथुन	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	मध्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	20.00		

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

नाड़ी दोष कष्टदायक नहीं है क्योंकि डतण् टपातंदज का नक्षत्र मृगशिरा है।

नाड़ी दोष कष्टदायक नहीं है क्योंकि Indrayani shintre का नक्षत्र मृगशिरा है।

डतण् टपातंदज का वर्ग मृग है तथा Indrayani shintre का वर्ग मार्जार है। इन दोनों वर्गों में परस्पर मित्रता है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार डतण् टपातंदज और Indrayani shintre का मिलान शुभ है।

मंगलीक दोष मिलान

डतण् टपातंदज मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

यदि वर या कन्या की कुंडली में द्वादश भाव में धनु, मेष तथा कर्क राशि का मंगल स्थित हो तब मंगली दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल डतण् टपातंदज कि कुण्डली में द्वादश भाव में कर्क राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

भौमेः वक्रिणि नीचगृहे वाऽर्कस्थेऽपि वा न कुजदोषः।

अर्थात् यदि मंगल वक्री, नीच, अस्त का हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल डतण् टपातंदज कि कुण्डली में नीच का है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

Indrayani shintre मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

व्यये च कुजदोषः कन्यामिथुनयोरविना।
द्वादशे भौमदोषस्तु वृषतौलिकयोरविना।।

अर्थात् व्यय भाव में यदि मंगल बुध तथा शुक्र की राशियों में स्थित हो तो भौम दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल Indrayani shintre कि कुण्डली में द्वादश भाव में वृश्चिक राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

तनुधनुमदमायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा।।

यदि मंगल स्व राशि अथवा उच्च का हो तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल Indrayani shintre कि कुण्डली में स्वराशि में है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु Indrayani shintre कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु डतण् टपातंदज कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

डतण् टपातंदज तथा Indrayani shintre में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।